अनमोल सत्संग परम संत पुष्करदयाल जी महाराज

फरीदाबाद, दिनांक 26 जुलाई 2015

! राधा–स्वामी.!

अब आप समझ गए होंगे कि गुरू का रूप क्या है?

गुरू मोहे अपना रूप दिखाओ, ये तो रूप लगे मोहे प्यारा
इस ही से उसको समझाओ, गुरू मोहे अपना रूप दिखाओ।

ये जो सर्गुण रूप है, ये भी प्यारा है, लेकिन ये रूप नही है गुरू का, लेकिन इस ही से उसको समझाओ, वो कौन सा रूप है जिसे कहते हैं, उसको दर्शाओ, वो रूप ना शब्द है, ना प्रकाश है, कुछ नही–कुछ नही, नेति–नेति, वेदों में लिखा है नेति–नेति, वहाँ कुछ नही है, लेकिन जहाँ कुछ नही है वहीं सब कुछ है। अब कल्पना करो, ये सारी कायनात बन गई, जब ये चाँद–सितारे नही थे, तब क्या था? तब अंधकार ही अंधकार था, कुछ नही था लेकिन कुछ तो था, हम कैसे कह सकते हैं कुछ नही था, अगर कुछ नही था तो ये बना कैसे, इतनी बडी दुकान खुली कैसे? कोई तो खोलने वाला है इस दुकान को, आखिर वो क्या था? उसकी शक्ल क्या थी? और सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि हम भी थे, जो चीज वहाँ थी, जिसको हम भगवान कहें, ईश्वर कहें या जो भी कहें, उसमें हम भी थे, फिर हम कहाँ से आये? हम वहाँ थे, उसके अंदर थे। हम कहते हैं, वैज्ञानिक कहते हैं वो एक शक्ति है, उसका कोई रूप नही है लेकिन है जरूर और उसने अपनी एक कल्पना से ये सारी कायनात खडी कर दी, इतनी शक्ति थी उसमे और हम भी उसी में थे। जब ये कायनात बनी, चाँद–सूरज बने, पेड–पौधे बने, जब उसने अपने मे से अलग करके हमको यहाँ उतार दिया। हम वहीं थे, उसके अंदर थे और जब हम उसी के अंदर थे तो हम क्या थे? हम भी वही थे जो वो था क्योंकि हम उसी के अंदर थे। पानी का एक मटका है उसमे पानी है और पानी की जो एक बूंद है वो भी तो पानी है, तो जो भी वहाँ शक्ति थी, हम भी उसी के अंदर थे और उसी का Part थे ओर हम भी वही थे और हम उससे अलग हो गए और आज भी हम वही हैं, उसी का हिस्सा हैं, जो हम उस टाईम थे, वही हम आज भी हैं, तो इससे क्या प्रूफ होता है? इससे ये प्रूफ हो जाता है कि हम ही हैं वही। बेकार में हम अपना समय र्बबाद करते हैं मन्दिर, मस्जिदों में जाकर, हरिद्वार जाकर, केदारनाथ जाकर, ढूँढते रहते हैं, किसको ढूँढते रहते हैं हम? अपने आपको ढूँढते रहते हैं, हमें पता ही नही हम किसको ढूँढ रहें हैं, और जिसको हमें ढूँढना है, वो हम ही है। अब Scientific Proof हो गया ना? पहले कुछ नही था लेकिन कुछ तो था और उस कुछ में हम भी थे और जब हम धरती पर आ गए तो हमारा क्या बदला? हमारा कुछ भी नही बदला वही हैं हम, हम वही है। काल ने हमको गुमराह कर दिया, एक बाता है, भगवान इधर है, दूसरा आता है भगवान उधर है, ये सब काल का चक्कर है और काल ने हमको गुमराह किया है, क्यों? क्योंकि वो नही चाहता कि हम सीधे रास्ते पर चलें, हमको हमेशा घुमा के रखता है, काल ने हमको ऐसा चक्रव्यूह में फंसा रखा है कि हमको पता ही नही कि हम क्या हैं? हम पशु जैसे बन गए हैं, हरेक आदमी हमको गुमराह करने की कोशिश करता है, चलो जी आज गणेश जी दूध पी रहे हैं और हम जा रहें हैं गणेश जी को दूध पिलाने, ये सब काल का चक्कर है। चलो जी सिद्धिविनायक, वहाँ जो भी जाता है उसकी मनोकामना पूरी हो जाती है, आज तक करोडो लोग वहाँ गए हैं, क्या सबकी मन्नत पूरी हो गई? ये हमको वेवकूफ बनाया जा रहा है, ये काल का चक्कर है और हमको पता ही नही हम कौन हैं? हम अपने आपको भूल गए हैं कि हम क्या हैं? हम भिखारियों की तरह मन्दिर में जाते हैं, पंण्डित जी हमको भी टीका लगा दीजिए, हमको भी प्रसाद दे दीजिए और लाईन में वहाँ खडे हो जाते हैं, वो पंण्डित कौन है टीका लगाने वाला और वो किसको टीका लगा रहा है? वो भगवान को टीका लगा

रहा है और हम भिखारियों की तरह उसके पास जाते हैं, हमको भी टीका लगाओ, यही काल का चक्कर है। हम अपना असली अस्तित्व भूल गए हैं। अब देखो मैंने Scientificly Proof कर दिया कि हम क्या हैं? तो, तो क्या? पहचानो अपने आपको कि तुम कौन हो? कोई जरूरत नही है तुमको किसी के पास जाने की, किसी मंदिर में जाने की कोई जरूरत नही है, हिमालय पर चढनें की कोई जरूरत नही है, मालिक को ढूँढते–ढूँढते केदारनाथ पहुँच गए और पानी का एक झोंका आया और 70 हजार आदमियों –औरतों को बहा ले गया, वो कौन थे? वो हम जैसे भोले–भाले मनुष्य थे, चलो जी केदारनाथ चलते हैं मालिक के दर्शन करने के लिए, तो पहचानो अपने आपको कि तुम कौन हो? जिस गुरू ने चोला छोड दिया है वो हमारे किसी काम का नही है, वो हमारे सवालों का जबाब नही दे सकता है, फिर किस काम का है वो, हमको काल ने गुमराह कर रखा है, कबीर सहाब कहते हैं– ये मुर्दों का देश है, यहाँ मुर्दों की पूजा करते हैं, जिन्दा को जला देते हैं, जिन्दा को कील ठोकते हैं, जिन्दा को कडाही में डालते हैं और जो मुर्दे हैं उनको माला पहनाते हैं और उनकी पूजा करते हैं, यही हमारी बदकिस्मती है, ये काल ने चक्कर चलाया है कि इंसान के रूप में कोई भगवान नही है, भगवान हैं गणेश के फोटो में, शिव के फोटो में, अरे शिव किसने देखा है? किसी कलाकार ने अपनी कल्पना से शिव की फोटो बनाई और हम उसे ही समझ बैठे ये भगवान है और जो जिंदा भगवान आता है मनुष्य के रूप में उसे कोई पहचानता ही नही है और उसे हम कडाही में डाल देते हैं, फोटो की पूजा करते हैं और जो जिंदा भगवान आता है मनुष्य के रूप में उसे तेल की कडाही में डाल देते हैं। ये है हमारा काल का चक्र, तुमको किसी को मानने की जरूरत नही है, अंग्रेजी में कहा है–Self Realisation is God Realisation, क्या मतलब? तुम अपने आपको पहचानो, तुम कौन हो? पता लगेगा खुद ही भगवान कौन है? हम जाते हैं चाँद को खोजने, मार्स को खोजने, हम जाते हैं हिमालय की ऊँचाई मापने, हम जाते हैं समुद्र की गहराई मापने, अपने आपको कभी देखते भी नही, हम भी अपने आपको मापे कि हम कितनी गहराई में हैं, हम भी अपने आपको जाने कि हम कौन हैं? अरे अपने आपको पहचानो, बस! और कुछ नही करना हमें, अपने आपको कैसे पहचानोगे आप? चार सवाल करो अपने आप से, मैं कोन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ? मैं क्यों आया हूँ? और मुझे यहाँ से वापिस कहाँ जाना है? ये चार सवाल करो अपने आप से ओंर इनके जबाब ढूँढो अपने अंदर, जब आप इन चार सवालों के जबाब ढूँढोगे, पता है क्या होगा? आपके साथ एक चमत्कार हो जाएगा, आपको गुरू मिल जाएगा, आपके सामने और कहेगा बेटा आपको इन चार सवालों के जबाब चाहिए ना और जब गुरू इन चार सवालों के जबाब देता है, फिर क्या होता है? हमारे नीचे (पैरों) से लेकर ऊपर (सिर) तक बिजली का करंट दौड जाता है और हम कहते हैं अरे ये क्या हुआ? जिसको मैं ढूँढ रहा था, वो तो मैं ही हूँ, यही जबाब मिल जाएगा, क्यों? क्योंकि तुम अपने आपको ढूँढते–ढूँढते उसी में समा जाते हो। नमक की डली समुद्र की तह ढूँढने चली और ढूँढते–ढूँढते रास्ते में ही खत्म हो गई, समुद्र बन गई, सागर बन गई वो और उसका असली रूप वही था, इसी तरह जब हम भी अपने आपको खोजने निकलते हैं, खोजते–खोजते हम उसी में समा जाते हैं और वही जबाब है हमारा, क्योंकि हम वहीं हैं।

! राधा–स्वामी!